अपनी दुनिया

अंक 17 जनवरी– मार्च17 हम बच्चों का अपना अखबार (सीमित वितरण के लिए) अनियमित प्रकाशन

खास रिपोर्ट

रेड हैण्ड अभियान पर विशेष

युद्ध और हिंसा से मुक्त हो बचपन

बच्चों को भविष्य का सबसे मूल्यवान माना जाता है। उनके नए उपजाऊ मस्तिष्क व विचारों को पनपाना और भविष्य के लिए उन्हें महान नागरिक बनाना हमारी जिम्मेदारी होती है। यही बच्चे आगे चलकर, साहसी, त्यागी, सृजनशील और उत्पादक मानव बनते हैं और देश दुनिया और समाजों को नई दिशा देते हैं तथा विश्व शांति व उन्नति के वाहक बनते है। उम्मीदों के विपरीत आज पूरी दुनिया में जहां बड़ी संख्या में बच्चे बाल श्रम की समस्या से जूझ रहे हैं वहीं बच्चों को युद्ध और आंतक तथा अन्य उन्माद में प्रयोग करने की घटनाओं में लगातार बढ़ोत्तरी हो रही है। दुनिया भर में इसके विरोध में आवाजें भी उठ रही है। पूरी दुनिया में विभिन्न देशों के भीतर व देशों के बीच चल रहे झगड़ों की भेंट बच्चे चढ़ रहे हैं। एक ओर युद्ध के दौरान वे मारे जा रहे हैं और उनका बचपन छीना जा रहा है वहीं लाखों लाख बच्चों को युद्ध व फसाद में शामिल कर मानवता के खिलाफ काम हो रहे हैं। अफगानिस्तान, चाड़, सेंटरल अफ्रीका, कोलंबिया, क्वांगो, भारत, इराक, इज्राइल, फिलिस्तीन, मयंमार, पाकिस्तान, फिलिपींस, सोमालिया, सूड़ान, सीरिया, थाईलैण्ड व यमन आदि स्थानों पर इस प्रकार के मामले देखने में आ रहे हैं।

12 फरवरी 2002 को संयुक्त राष्ट्र के एक बड़े समझौते के बाद भी दुनिया भर में अनेक देश इसका उल्लंघन कर रहे हैं। इस समझौते में देशों ने इस बात पर सहमति जताई थी कि 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों को युद्ध व सेना आदि में सम्मिलित नहीं किया जाएगा। इसके बाद भी दुनिया भर में सेनाओं, पुलिस बलों, द्वारा बाल सैनिकों को बलपूर्वक भर्ती कर युद्ध व हिंसा में शामिल करवाया जा रहा है। इसमें से अनेक स्थानों पर बच्चों की आयु 7 वर्ष तक भी पाई गई। अनेक स्थानों पर बच्चे स्वयं सेवकों की भॉति काम कर रहे हैं।

युद्ध व हिंसा की खतरनाक स्थिति में काम करने वाले ये बच्चे जो बच भी जाते हैं कभी सामान्य नहीं हो पाते। युद्ध, हिंसा, लूटपाट, के साथ बारूदी

अपनी बात

उत्तराखंड उच्च न्यायालय ने एक ऐतिहासिक फैसला देते हुए गंगा और यमुना नदी को "जीवित मानव का दर्जा" देने का आदेश दिया। न्यायमूर्ती राजीव शर्मा और आलोक सिंह की एक खंडपीठ ने एक जनहित याचिका पर निर्णय देते हुए न्यायालय ने नदियों को मानव समान जीवित बताकर ऐतिहासिक चर्चा को जन्म दे दिया है। उत्तराखण्ड हाईकोर्ट द्वारा एक जनहित याचिका पर यह की गई विवेचना स्वागत योग्य हैं, जिसमें गंगा और यमुना नदी को जीवित मनुष्य के समान अधिकार दिए हैं। जिसका अर्थ है कि इन दोनों नदियों को गंदा करना या क्षति पहुंचाना ठीक वैसा ही है, जैसा किसी मानव को नुकसान पहुँचाना है। ऐसा करने वाले के साथ भारतीय दंड सहिता के तहत मुकद्मा चलेगा और व्यक्ति जेल भी जा सकता है। इस तरह की विवेचना से गंगा और यमुना को प्रदूषित कर रहे लोगों व कंपनियों पर रोक लगेगी। अर्थात अब सरकार को इन नदियों के वैधानिक अभिभावक की भॉति कार्य करना होगा। ब्रहमांड में पृथ्वी ही एक ऐसा ज्ञात गृह है जहां जीवन है। पृथ्वी मानव के साथ अन्य लाखों जीव प्रजातियों का भी घर है। पृथ्वी का अस्तित्व यहाँ पर रहने वाले जीवधारियों, यहाँ के वायुमंडल और अन्य अजैविक क्रियाओं के संतुलन पर टिका हुआ है। अर्थात प्राणियों एवं वनस्पतियों के परस्पर संबंधों एवं इसके संतुलन से ही पृथ्वी में जीवन है। किंतु विकास के नाम पर मनुष्य ने जिस तरह प्रकृति से छेड़छाड़ की है, उसने धरती के जल, वायु व मिट्टी के भौतिक व रासायनिक गुणों को बदलना शुरू किया है। परिणामस्वरूप धरती पर प्रदूषण के विभिन्न स्वरूपों ने जन्म लिया है और लगातार धरती के बढ़ते प्रदूषण का असर जैविक घटकों पर पड़ रहा है। पेड़ों का अंधाधुंध कटान, कलकारखानों की गंदगी जहाँ एक और नदियों और वातावरण को प्रदूषित कर रही है, वहीं दूसरी तरफ अनेक वनस्पतियों व जीव जंतुओं की प्रजातियां जो कि हमारे प्राकृतिक विरासतों की धरोहर हैं, उन्हें भी विलुप्त कर रही है। जलवायु परिवर्तन, ओजोन परत का क्षीर्ण होना व धरती का बढ़ता तापमान के लिए मानव गतिविधियां ही जिम्मेदार हैं। प्रकृति के अंधाधुंध दोहन में किए जा रहे मानवीय हस्तक्षेपों को मानव द्वारा ही रोका जा सकता है।आने वाली पीढ़ियां इसकी चिंताओं में जुट गई है। नए दौर के युवा व बच्चे मिलकर अब अपनी पर्यावरणीय संवेदनाओं को अभिव्यक्ति भी करने लगे हैं। बीते 11 से 13 नवम्बर 2016 को सेवाग्राम आश्रम वर्धा में आयोजित युवा सम्मेलन चर्चाओं में रहा। आज इस सम्मेलन के एजेण्डे पर बच्चे काम करते दिखाई दे रहे हैं। भारत के 16 राज्यों व नेपाल से आए पर्यावरण की रक्षा के लिए समर्पित 102 युवाओं और बच्चों ने अपने पारिस्थितकीय अधिकारों पर बात रखी और यह मांग भी उठाई कि आधुनिक विकास का सिद्धांत पर्यावरणीय व प्राकृतिक विरासतों के दोहन पर टिका हुआ है। इसलिए विकास और पर्यावरण संरक्षण का मुद्दा नीतिगत रूप स भी उठना चाहिए। इससे पूर्व भी द्वितीय युवा पारिस्थितिकीय अधिकार सम्मेलन में जो कि इंडियन सोशल इंस्टिट्यूट बंगलौर में आयोजित हुआ था में युवाओं व बच्चों ने अपने पारिस्थितिकीय अधिकार पर एक चार्टर तैयार किया था, जिसमें स्थानीय एवं राष्ट्रीय पारिस्थितिकी तंत्रों की तेजी से बिगड़ती दशा पर गहरी चिंता व्यक्त की गई और यह मांग रखी गई कि हमें संतुलित और अधिकतम शारीरिक, मानसिक और सांस्कृतिक रूप से अनुकूल विकास के लिए आवश्यक स्वच्छ, पारिस्थितिकीय रूप से संतुलित, स्वस्थ एवं लोचपूर्ण वातावरण का अधिकार हो। बच्चों व युवाओं को सभी प्रकार के प्रदूषक पदार्थों से मुक्त स्वच्छ, सुरक्षित पानी के उपभोग का अधिकार मिले।हमें प्रदूषक तत्वों और विषैली गैसों से मुक्त ताजा, स्वच्छ हवा में सांस लेने का अधिकार मिले। हमें स्थानीयए देसी और कम से कम दूरी से आने वाले स्वस्थ, पोषक, प्रदूषण रहित और सुरक्षित खाद्य पदार्थों का अधिकार मिले। हमें प्रकृति में उसके शुद्धतम रूप में उपभोग का अधिकार मिले जिनमें साझा संसाधन भी शामिल हैं। हमें वायुमंडलीय परिवर्तन, प्राकृतिक आपदाओं और स्वास्थ्य संबंधी खतरों का सामना करने के लिए प्रकृति की शिक्षा यानी परंपरागत पारिस्थितिकीय ज्ञान पाने का अधिकार मिले। हमें पर्यावरण तथा पारिस्थितिकीय अधिकारों को प्रभावित करने वाले विषयों पर नीति बनाने में सहभागिता का अधिकार मिले। हमें वैश्विक पर्यावरणीय राजनीति व व्यापार के नाम पर होने वाले शोषण से बचाव और उपयुक्त सुरक्षा व न्याय पाने का अधिकार मिले। हमें अपनी संस्कृति, जैव विविधता एवं विशिष्ट प्राकृतिक संपदाओं के साथ जीने और उनमें अपनी विशेष पारिस्थितिकीय स्थान पाने का अधिकार मिले। आइये हम भी पर्यावरण के लिए समर्पित युवाओं व बच्चों के साथ जुड़े और पारिस्थितिकीय अधिकारों की मांग को आगे बढ़ाये और अपने पर्यावरण व प्राकृतिक विरासतों की सुरक्षा के लिए कार्य करें। बच्चों व युवाओं की अपने पारिस्थितिकीय अधिकारों की माँग आज मुखर होने लगी है। जो हमारे नीतिकारों को सोचने के लिए बाध्य भी करेगा। यदि वे उदासीन भी रहेंगे तो कब तक। तय है कि आने वाले दौर का नेतृत्व पर्यावरण व पारिस्थितिकी के लिए जागरूक इन्हीं बच्चों के हाथों में चला जाएगा।

सुरंग बिछाने, घात लगाकर हमला करने व युद्ध के सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में इन बच्चों का अधिक प्रयोग हो रहा है। इस दौरान बच्चों खासकर बालिकाओं के साथ यौन हिंसा भी होती है और बड़ी संख्या में बच्चे अनेक बीमारियों से भी ग्रसित रहते हैं। आतंकी समूह हो अथवा अलगाववादी समूह हो अथवा सेनाएं बच्चों के जीवन से खिलवाड़ कर रही है। युद्ध और हिंसा में शामिल लाखों लाख बच्चे अपाहिज व किसी न किसी प्रकार की शारीरिक दुर्बलता के भी शिकार हो रहे हैं। अत्यंत अमानवीय स्थिति में रहने वाले ये बच्चे आज के सभ्य व शांति पूर्ण समाजों व देशों के समझ एक बड़ी चिंता का विषय हैं और मानवअधिकारों व मानवता के लिए चुनौति भी।

युद्ध व हिंसा के परिवेश में 18 वर्ष से कम आयु के बच्चे जिन्हें खाना बनाने, हमला करने, आत्मघाती मानवबम बनाने, जासूसी करने, व संदेशवाहक बनाने अथवा यौन शोषण के लिए प्रयोग किया जाता है, बाल सैनिकों की श्रेणी में आते हैं। अनेक स्थानों पर लोगों से बलपूर्वक इन बच्चों को इसप्रकार की कार्यवाही में शामिल करने के लिए दबाव बनाया जाता है। अनेक स्थानों पर धन के लालच अथवा अन्य प्रलोभन के कारण बच्चे इस प्रकार के काम में शामिल हो जाते हैं। प्रायः निर्धन, शरणार्थी, अशिक्षित व युद्ध प्रभावित क्षेत्रों के बच्चे इस काम में शामिल होते हैं जिसमें 30 प्रतिशत तक लड़कियां भी होती है। 2007 में इनकी संख्या 10 हजार तक ऑकी गई थी जो वर्तमान में 3 लाख से अधिक हो गई है। आज भी दुनिया के लगभग 30 स्थानों पर युद्ध अथवा आपसी झगड़ों के कारण युद्ध जारी है। इसके साथ ही अनेक स्थानों पर बच्चों को अपने ही परिवार और समाज के खिलाफ अपराध करने का बाध्य किया जाता है जिससे वे पुनः मुख्यधारा में वापस न आ सकें। अंतर्राष्ट्रीय कानून 15 साल तक के बच्चों को इस प्रकार के कृत्य में शामिल करने को अपराध मानते हैं।

दुनिया के दो तिहाई देश मानते हैं कि बच्चों को स्वयं इस प्रकार के काम में शामिल होने की आयु सीमा 16 होनी चाहिए। दुनिया के अनेक देश 18 वर्ष की मानक आयु से पूर्व बच्चों की भर्ती कर उन्हें सैनिक के रूप में तैयार कर देते हैं। मनोवैज्ञानिक रूप से तैयार करने के उद्देश्य से बच्चों को प्रारम्भिक अवस्था से युद्ध की प्रथम पंक्ति में प्रयोग किया जाता है और वे अत्यंत भयानक स्थिति से गुजरते हैं। तकनीकी विकास के साथ आज दुनिया भर में इन बच्चों को हल्के व आसानी से संचालित होने वाले हथियारों से भी लैस किया जाने लगा है। कुछ देशों में युद्ध से वापस लौटे बच्चों के पुनर्वास की व्यवस्था है लेकिन मनोवैज्ञानिक व शारीरिक रूप से ठीक होने में इन बच्चों को लंबा समय लग जाता हे।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने 2000 में बाल अधिकारों की संधि में 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को युद्ध में शामिल न करने की बात कही थी जिसमें दुनिया के 150देशों ने हस्ताक्षर किए थे । 12 फरवरी 2002 को पुनः बच्चों को सैन्य अभियानों में प्रयोग न करने को लेकर एक अंतर्राष्ट्रीय संधि में देशों ने हस्ताक्षर किए और आज दुनिया के 50 से अधिक देश इस दिशा में काम करने लगे हैं।

संयुक्त राष्ट्र में जून 2013 में दुनिया भर में बाल सैनिकों की दासता को खत्म करने का लक्ष्य रखा था और 2016 तक सभी देशों को इस दिशा में काम करना था। इसके विपरीत आज दुनिया के विभिन्न देशों में बच्चे के साथ यह अन्याय जारी है। अफ्रीकी देश बुरूण्डी जहां 1993 से गृहयुद्ध चल रहा है, आधे से अधिक युवा आबादी वाले इस देश में बीते कई सालों से बाल सैनिकों का उपयोग हो रहा है। युद्ध, राजनीतिक संघर्ष और सैन्य संघर्ष में इस देश में बड़ी संख्या में बाल सैनिकों के प्रयोग पर दुनिया भर में संस्थाओं ने चिंता व्यक्त की है। अनुमान है कि इस छोटे से देश में 5 हजार से अधिक बाल सैनिकों का शोषण हुआ। इसी प्रकार कोलंबिया में बीते 40 सालों से चल रहा संघर्ष भी हजारों हजार बच्चों को युद्ध व हिंसा के मुंह में धकेल रहा है। इस देश में बड़ी संख्या में लड़कियों को भी युद्ध में धकेलकर मानव अधिकारों को उल्लंघन हो रहा है।

इसी प्रकार क्वांगो में भी 30 हजार से अधिक बच्चों के सैनिक के रूप में युद्ध में शामिल होने के प्रमाण है। 1998 से इस देश में गृह युद्ध के हालात पैदा हो गए थे जिसमें लाखों लोगों ने अपनी जान गंवाई।

इसी प्रकार 2003 से आंतरिक अशांति और युद्ध से जूझ रहे लाइबेरिया में भी 21 हजार से अधिक बाल सैनिक आजादी के लिए संघर्ष करते दिखे। इस देश में लाखों लाख बच्चे युद्ध व हिंसा के कारण अपंग और अक्षम हो गए है।

माना जाता है कि अत्यधिक यातना और विषम हालात पैदा कर उन्हें युद्ध में झोका जाता है। यमन में भी वर्ष 2015 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने 2 हजार से अधिक बच्चों के मारे जाने की पुष्टि की।

मयंमार जैसे छोटे से देश में भी युद्ध व आशांति की भेंट चले लाखों लाख बच्चे आज भी यातना का शिकार है। वहीं युगाण्डा में भी 25 हजार से अधिक बाल सैनिकों को युद्ध व युद्ध जनित कामों में झोंका गया है।

भारत में भी नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में बच्चों को बाल सेना बनाकर प्रयोग करने के मामले प्रकाश में आए हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस प्रकार के मामलों पर चिंता जताई गई है। वहीं पाकिस्तान में भी कम आयु में बच्चों को सैन्य बलों में भर्ती करने व आंतरिक हिंसा तथा साम्प्रायिक समूहों द्वारा बच्चों के जीवन से खिलवाड़ करने के मामले प्रकाश में आते रहे हैं।

यूनीसेफ, ह्यूमन राइट वाच, एमनेस्टी इंटरनेशनल, सहित अनेक बड़ी संस्थाएं इस प्रयास में आज भी लगी है और वे मानते हैं कि यह दुनिया भर में बाल अधिकारों का गंभीर उल्लंघन है। दुनियां भर में विरोध के स्वरों के तेज होने के साथ विभिन्न देशों में बच्चों के हक की आवाज भी तेज होने लगी है।

आज दुनिया के विभिन्न देशों में अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के हस्तक्षेप के बाद इस दिशा में उत्तरोत्तर सुधार की उम्मीद है। अनेक देशों में आज सैन्य गतिविधियों में बच्चों के प्रयोग में कमी आने लगी है तो अनेक स्थानों पर बातचीत व समझौते के बाद युद्ध विराम अथवा शांति बहाली की दिशा में प्रयास तेज हो रहे हैं। आज दुनिया के लगभग 50 देशों में बच्चों के प्रति इस प्रकार की अमानवीयता देखी जा रही हैं। सरकारों के अतिरिक्त अनेक गैर राज्य बल बच्चों का सैन्य उपयोग कर रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र प्रतिवर्ष 'शर्म की सूची' नामक एक दस्तावेज निकालकर इस प्रकार के देशों को चर्चा में लाता है।

हमारा भूगोल– पौड़ी जनपद

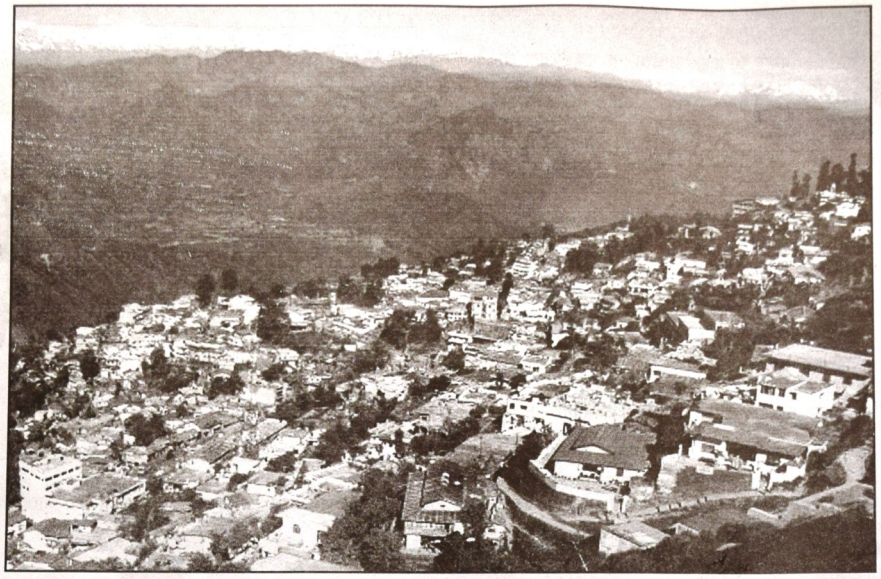

बच्चों, आपने उत्तराखण्ड के विभिन्न जिलों के बीच पौड़ी जिले का नाम अवश्य सुना होगा। प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर गढ़वाल का यह जिला ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। 1960 तक गढ़वाल के इस क्षेत्र को बाद में दो जिलों में बांटा गया। एक बना पौड़ी तो दूसरा चमोली। 1960 से ही यह जिला स्वतंत्र रूप से अस्तित्व में आया। गढ़वाल मंडल के यह प्रमुख जिला मुख्य रूप से उत्तरी हिमालय का भाग में स्थित है। इसका एक भाग अंशतः गंगा का मैदानी हिस्सा भी कहलाता है। जिले का अधिकांश भूगोल पहाड़ी है और यहां शिवालिक तथा मध्य हिमालय की पहाड़ियां आती है। जिले का कुल क्षेत्रफल 5230 वर्ग किमी है। पौड़ी जिला दक्षिण पश्चिम में उत्तरप्रदेश के बिजनौर से जुड़ जाता है। वहीं इसके पश्चिम से दक्षिण पूर्व तक हरिद्वार, टिहरी गढ़वाल, रूद्रप्रयाग, चमोली, अल्मोड़ा व नैनीताल आदि जिले जुड़े है।

जनपद का मौसम वर्ष भर अच्छा रहता है। गर्मियों में यहां का मौसम अपेक्षाकृत सामान्य रहता है जबकि जाड़ों में यहां की जलवायु ठण्डी रहती है। जिले के मैदानी भाग में गर्मियों में जरूर तापमान 43 से ऊपर भी जाता है। सर्दियों में उच्च भागों पर हिमपात होता है। साल भर यह जिला हरियाली से भरा दिखता है।

1997 में इसके कुछ हिस्से को रूद्रप्रयाग जिले में शामिल कर दिया गया है। इस जिले में वर्तमान में 10 तहसीलें है। जिनके नाम पौड़ी, लैंसडौन, कोट्द्वार, थलीसैंण, धुमाकोट, श्रीनगर, सतपुली, चौबटटाखाल, यमकेश्वर व चाकीसैंण है। कुमाउं के मौहान, सराईखेत, महलचौरी, नागचूलाखाल, आदि स्थानों से इस जिले के लिए वाहन जाते हैं। जनपद में 15 विकासखण्ड है, जो कोट, पाबौं, द्वारीखाल, एकेश्वर, नैनीडाण्डा, कल्जीखाल, थलीसैंण, दुगडडा, रिखणीखाल, पोखड़ा, पौड़ी, बीरोखाल, जयहरीखाल, यमकेश्वर व खिर्सू है। इस जिले में कुल 3473 गांव है जिसमें से 331 गैर आबाद है। जनपद में प्रति वर्ग किमी में 129 लोग रहते हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 687271 है, जिसमें 360442 महिलाएं व 326829 पुरूष है। जनपद की साक्षरता दर 82.02 प्रतिशत है। जनपद की जलवायु समशीतोष्ण व उप सम शीतोष्ण है। जनपद में वार्षिक वर्षा दर 218 सेमी है। 90 प्रतिशत भाग मानसून आधारित वर्षा पर निर्भर रहता है। जनपद में दूधातोली सर्वाधिक ऊंचाई 3116 मीटर पर स्थित है जबकि मैदान में चिल समद तल से 249 मीटर पर स्थित है। यहां का उच्चतम ऊँचाई वाला गॉव 2480 मीटर पर स्थित है। अपनी विशिष्ठ प्राकृतिक व जैव विविधता की पहचान वाला यह जिला 59 प्रतिशत वन क्षेत्र से घिरा है। जहां खैर, साल, शीशम, बॉस, चीड़, बॉज, देवदार आदि के वन अलग अलग क्षेत्रों में पाए जाते हैं। इसके साथ ही वहां उत्तराखण्ड में पाई जाने वाली अन्य वनस्पतियां व झाड़ियां भी पाई जाती है।

प्राकृतिक व वन्य जीवों की दृष्टि से यह जनपद धनी माना जाता है। इस जनपद के वनों में बाघ, चीता, तेंदूआ, आदि के साथ सियार, कस्तूरी मृग, कांकड़, भालू, चमगादड़, गिलहरी, बंदर, मुर्गी, लंगूर आदि पाए जाते हैं। हिमालयी क्षेत्र में पाई जाने वाली 400 पक्षी प्रजातियों में से अनेक यहां पाई जाती है।

खनिज की दृष्टि से भी जनपद में अनेक संभावनाएं है। हालांकि इस जनपद में खनिज दोहन नहीं होता फिर भी यहां तांबा, सीसा, चॉदी, सोना, लोहा आदि कम मात्रा में खोजा गया है। ग्रेफाइट व सिल्वर की खानें यहां होने की पूरी संभावना है। यहां एक 60 किमी लंबी व 2 किमी चौड़ी सोने की उपलब्धता वाली पटटी भी मौजूद है। अधिकांश क्षेत्रों में रेता, पत्थर आदि का अवश्य लोग प्रयोग करते हैं। फसलों की बात करें तो इस जनपद में धान, गेहूँ, तिलहन, फल, सब्जी प्रचुर मात्रा में होती है। पर्वतीय क्षेत्रों में मोटा अनाज, मंडुवा, झंगोरा, भटट, गहत, लोबिया, आदि का भी उत्पादन होता है। इसके साथ ही स्थानीय सब्जी भी लोग पर्याप्त मात्रा में उगाते हैं। नदी घाटी क्षेत्रों में खान पान में मछली का प्रयोग भी अधिक होता है।

जनपद में सभी धर्मों के लोग निवास करते हैं। हिंदू, मुस्लिमों के साथ यहां बौद्ध व जैन लोग भी पाए जाते हैं। हिंदी व गढ़वाली यहां की मुख्य भाषाएं है। अधिकांश समाज आजीविका के लिए कृषि व पशुपालन पर ही निर्भर है। क्षेत्र में औद्योगिक इकाईयां नहीं है अपितु लोग पर्यटन व्यवसाय से भी आय अर्जित करते हैं। जनपद में कोटद्वार के मैदानी क्षेत्र तक रेल जाती है। सभी सभी भागों में सड़क यातायात है। जनपद में पर्यटन और धार्मिक स्थलों की भी भरमार है। खिर्सू, चौखंबा व्यू प्वाइंट, दूधातोली, कण्व आश्रम, डांडा नागराज, तारकेश्वर महादेव, बिनसर महादेव, शून्य शिखर आश्रम, कार्बेट टाईगर पार्क का हिस्सा आदि इस जनपद के रमणीय स्थल हैं।

उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ (अजय सिंह बिष्ट), उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत, पूर्व मुख्यमंत्री भूवन चंद्र खंडूडी, रमेश पोखरियाल, व विजय बहुगुणा इसी जनपद के मूल निवासी रहे हैं।

अधिकार हमारा है–

आओ खेलें खेल
नेता खोजो

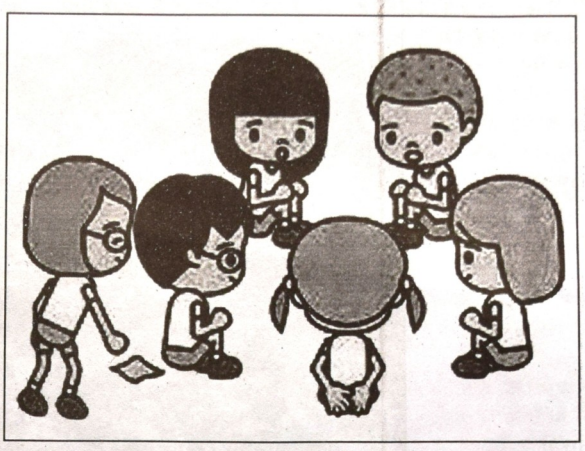

बच्चों आज हम आधे घंटे के एक रोचक खेल पर चर्चा करेंगे। इसे जानने के बाद अवश्य आप इस खेल को खेलना चाहेंगे। यह खेल हमें सामूहिकता के साथ बाधाओं से संघर्ष करना सिखाता है।

खेल के नियम व आवश्यकता–

इस खेल को केवल एक रुमाल के सहारे खेला जा सकता है। खेल में अपने मित्रों को समूह में एकत्र कीजिए और प्रत्येक समूह को दो टीमों में बॉटकर गोले की लंबाई के पीछे 20 से 30 फीट दूरी पर खड़ा कीजिए। गोल लाईन से आधी दूरी पर एक रुमाल को रख दीजिए जिसे हम खेल में अपना अधिकार मानकर चल रहे हैं। इसके बाद प्रत्येक खिलाड़ी को एक संख्या दे दीजिए। अब प्रशिक्षक एक संख्या पुकारेगा और हर टीम का एक खिलाड़ी उस संख्या को सुनकर जिसकी वह संख्या है, केंद्र में आएगा। वह कोशिश करेगा कि दूसरे खिलाड़ी द्वारा बिना बाधा पहुंचाए रुमाल को अपने घेरे में पहुंचाए। ज्यादा कुशल खिलाड़ी केंद्र की तरफ जाएंगे और रुमाल के आसपास तब तक चक्कर लगाएंगे जब तक उसे झपट न लें। हर बार सफलतापूर्वक रुमाल के साथ लौटने पर अपना अधिकार पाने पर टीम को एक अंक मिल जाएगा। यह खेल लगभग कबड्डी के समान होगा। इस खेल का लक्ष्य सफलतापूर्वक रुमाल के साथ वापस आना है या सामने वाले खिलाड़ी जिसने रुमाल उठा लिया है तो उसे रोककर अपने घेरे के अंदर जाने से रोकना है। हर एक बार अंकर बनाने या रोकने में सफल होने पर रुमाल बीच में रख दिया जाता है, एक दूसरी संख्या को पुकारा जाता है। इस निर्धारित अंकों की संख्या के लिए 25 से 30 अंक काफी होंगे।

खेल के अंत में चर्चा–

यह खेल कैसा लगा ?
अधिक अंक पाने वाली विजेता टीम के अनुभव
कम अंक पाने वाली टीम के अनुभव
इस खेल से मिली सीख।

यह खेल में बाधाओं के बाद भी अधिकार व लक्ष्य को पाने के तरीके सिखाता है साथ ही मिल जुलकर परिणाम पाने की ओर प्रोत्साहित करता है।

शीशी का बुलबुला कराए लैंस का ज्ञान

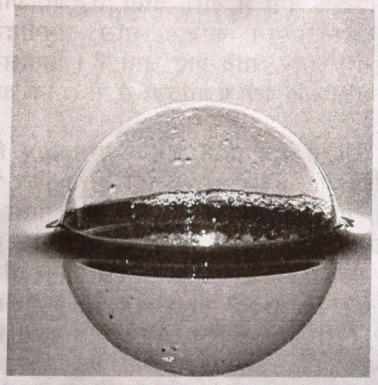

बच्चो, शीशी में पानी के बुलबुले का एक अनोखा खेल आपको लैंस का ज्ञान कराएगा। इस खेल के लिए हमें एक पुरानी 2 मिलीलीटर की पुरानी इंजेक्शन की शीशी चाहिए। इस शीशी में एल्युमीनियम की सील और रबर का ढक्कन लगा रहना चाहिए। एक पुराने प्लास्टिक के इंजेक्शन से शीशी में पानी भरेंगे। इस बात की सावधानी बरतनी होगी कि सुई हमें चुभे नहीं। शीशी के पानी को हिलाकर उसे इंजेक्शन से खींचकर बाहर फेंक दो। इस प्रकार शीशी एकदम साफ हो जाएगी। अब इस शीशी में इंजेक्शन से साफ पानी भरना है। चित्र 1 के अनुसार पानी इतना भरना है कि शीशी में हवा का एक बुलबुला रह जाए। चित्र 2 के अनुसार शीशी को अखबार पर रखना है। अब अखबार में लेटी हुई शीशी में बुलबुले से अखबार के अक्षरों को पढ़ना है। अब हमें अखबार के अक्षर छोटे दिखाई दे रहे हैं। चित्र 3 में यह हवा का बुलबुला अवतल लैंस की भाँति काम कर रहा है। अगर हम अखबार को शीशी के कॉच के सहारे पढ़ेंगे तो अखबार के अक्षर अब बड़े दिखाई दे रहे हैं। यहां कॉच की शीशी उत्तल लैंस की भाँति काम कर रही है। चित्र 4 में शीशी उत्तल लेंस की भाँति काम कर रही है। इस प्रकार इस छोटे से खेल से हमें लेंस के उत्तल और अवतल आकृति के गुणों का ज्ञान होता है।

कविता-

पानी है अधिकार हमारा

पानी है, अधिकार हमारा
इसके बिना है नहीं गुजारा
सब जीवों की प्यास बुझाता है
तभी तो जीवनदाता है।

हम सब पानी आज बचाऐंगे,
तभी कल की पीढ़ी को दे पाएंगे।
पानी है सबका अधिकार
बंद हो इसका व्यापार
जब नौले, धारे, नदियां बचाएंगे
बचाने जंगल को आगे आएंगे।
तभी हम पानी निरंतर पाएंगे।
पानी है, अधिकार हमारा,
इसके बिना है नहीं गुजारा।

दीपिका नेगी
कक्षा –7
पारिस्थितिकीय शिक्षण केंद्र

– बारिश –

बारिश के हैं दिन आए
देखो बारिश के दिन हैं आये
साथ में अपने बादल लाए।
गाड़–गधेरों में पानी है लाये,
बारिश के दिन हैं आए।

चारों ओर बिछी हरियाली की चादर
सब खुश हैं, मानव और जानवर
जंगल हरे–भरे हो आए
जोंक भी लपलप करते आए।

देखों कितना सुंदर मौसम
नाचने–गाने का है मौसम
खेतों में फसलें लहलहाई
बंदरों की टोली ललचाई

देखो बारिश के दिन हैं आए
साथ में अपने बादल लाए।

दिनेश/भूवन
पारिस्थितिकीय शिक्षण केंद्र

ब्रिटिश हुकूमत की याद दिलाता है, लेंटाना खरपतवार

दोस्तों,

वन्य जीवों की श्रृंखला को विराम देते हुए हम अपनी दुनिया के इस अंक से खरपतवारों की श्रृंखला शुरू कर रहे हैं। वैसे तो हर पौधे का प्रकृति में महत्व है, लेकिन मानव जाति, पशु जगत और खेती के लिए कुछ पौधे नुकसानदेह भी हैं, इनमें से कुछ पौधे प्रकृति में भू–क्षरण, वायु की शुद्धता आदि के कारण भी नुकसान देह होते हैं। हम अपने आसपास अनेक खरपतवार देखते हैं, इनमें से अनेकों के विषय में हमें जानकारी नहीं होती। इस श्रृंखला में ऐसे ही खरपतवारों को जानने का प्रयास किया गया है। उम्मीद है कि यह जानकारी आपके लिए लाभप्रद होगी।

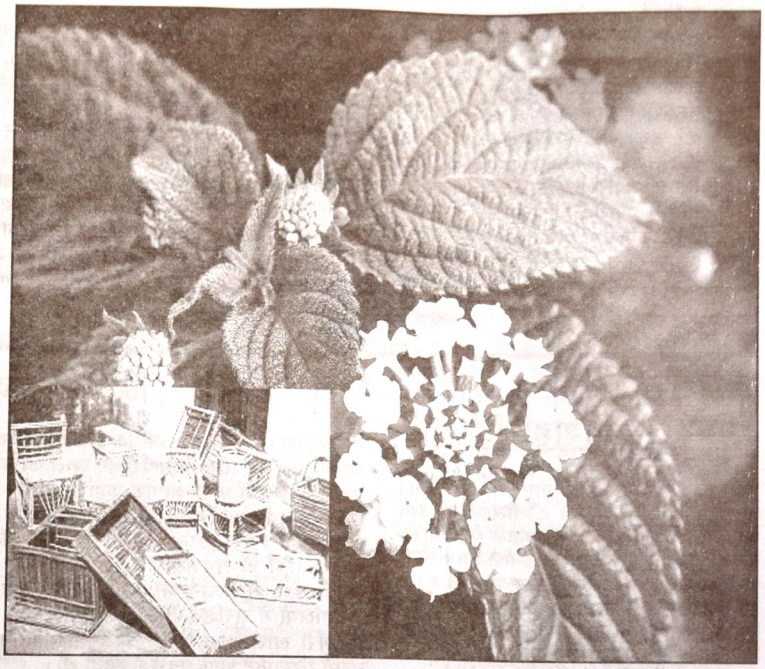

प्रिय, पाठको,

ब्रिटिश शासनकाल की आपको जानकारी होगी। बस थोड़ा सा मौका मिलते ही अंग्रेजों ने किस प्रकार तेजी से भारत में प्रसार किया और यहां अपनी हुकूमत चलानी शुरू कर दी। ठीक इसी प्रकार भारत में पूरे भूगोल में लेंटाना जिसे आप कूरी घास व झाड़ के नाम से जानते हैं ने अपने पैर पासरे। वनस्पति वैज्ञानिक मानते हैं कि किसी भी देश के भूगोल में बाहरी देश से पौधों व बीजों का आना आम बात हैं लेकिन वह प्रजातियां अगर यहां पैर पसारने लगे तो यह स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र के लिए घातक हो जाता है। दुनिया में यूरोप के फैलाव व यूरोपीय शक्तियों के इधर उधर जाने के बाद वर्ष 1500 के आसपास पादप प्रजातियां भी दुनियां में इधर उधर फैलने लगी थी। बाद के वर्षों में जब एक देश से दूसरे देश अनाजों का आदान प्रदान हुआ तो अनेक खरपतवारों का फैलाव शुरू हो गया।

वैज्ञानिक अध्ययन बताते हैं कि 1690 से 1880 तक लेंटाना की प्रजातियां दक्षिणी अमेरिका से यूरोप के देशों में गई और बाद में यूरोप से उसके उपनिवेशों में पहुंची। 1850 के बाद अंग्रेजों ने इसे कॉटिनेंटल बोर्ड के बगीचों में रोपना शुरू किया। ब्रिटिश काल में बाग बगीचों को सजानें विशेषकर इसकी खुशबू के कारण इसे इस पौधे को लाया गया और वह भारत में उत्तरोत्तर फैलता गया।

कूरी व लेंटाना एक चिरस्थायी पौधा है। घास और झाड़ीनुमा इस पौधे का आकार 2 मीटर तक होता है। इसमें लाल, बैंगनी, पीले, सफेद व संतरे के रंग के आकर्षक और बहुरंगी फुलों का झुण्ड आता है। परागण के दौरान पुष्पों का रंग बदलता भी रहता है। दुनिया भर में इसकी 150 प्रजातियां पाई जाती है। इसके अमेरिका और अफ्रीका का उष्णकटिबंधीय पौधा माना जाता है। भारत में वैज्ञानिक अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि सर्वप्रथम इसे 1807 में यहां देखा गया। बाद में यह भारतीय हो गया। अनेक विद्वानों का मानना है कि हिमालीय भारत से यह पौधा दक्षिण भारतीय भू–भाग में पहुंचा और शिवालिक पहाड़ी क्षेत्र में फैल गया। उत्तराखण्ड के साथ हिमांचल प्रदेश और कश्मीर में भी लोग इस खरपतवार से परेशान हैं और यह वहां की खेती को अत्यधिक प्रभावित कर रहा है। भारत सहित विश्व के अनेक देशों ने इस प्रजाति को नष्ट करने के लिए अनेक दशकों तक अभियान भी चलाए। इसके आकर्षक पुष्पों के कारण पर्यटन के लिए तथा काष्ठ कला के कारीगरों की दृष्टि से लेंटाना को प्रोत्साहित किया गया। दक्षिण भारत में अनेक आदिवासी गांवों में लोगों ने लेंटाना से कुर्सी, आभूषण, टोकरी आदि बनाकर उसे आजीविका से जोड़ना शुरू किया और बॉस की भॉति इसका उपयोग भी होने लगा और दक्षिण भारत में अनेक स्थानों पर इसे बोया भी जाने लगा।

लेंटाना की पत्तियों में विष पाया जाता है इसलिए अनेक पशु इसे खाने से बचते हैं। भारत सहित विश्व के अनेक देशों में वैज्ञानिकों ने पशुओं खासकर घोड़ों, भेंड़, आदि के इसकी पत्तियों के खाने के बाद मरने पर चिंता जताई है। वैज्ञानिकों के अनुसार वन में अनेकों बार पशु पक्षी इस पौधें को खाने से मर जाते हैं। हालांकि अनेक पक्षी इसके बीजों को खाते है और इनका प्रसार भी करते हैं। इसकी पत्तियों के रस का छिड़काव कर सब्जी में कीड़े मारने के लिए उपयोग किया जाता है।

दुनिया भर में सर्वाधिक घातक और फैलने वाले इस खरपतवार को लेकर दुनिया भर में दो सौ सालों से जो प्रयास हुए हैं उसके बाद भी इसपर काबू नहीं पाया जा सका है। अध्ययन बताते हैं कि भारत में 1 करोड़ 30 लाख हैक्टेअर, ऑस्ट्रेलिया में 50 लाख और दक्षिण अफ्रिका में 20 लाख हेक्टेअर भूमि इसकी चपेट में है। विषम से विषम भौगोलिक चुनौतियों के बाद भी यह पौधा जीवित रहता है जिस कारण इसे समाप्त करना कठिन हो जाता है। इसमें बीजों का उत्पादन भी अत्यधिक होता है।

अध्ययन बताते हैं कि लेंटाना का एक पौधा साल में 12 हजार से अधिक बीज उत्पन्न करता है। लेंटाना को भू–क्षरण का मुख्य कारण माना जाता है, यह भूमि की पकड़ को कमजोर करता है। आज विश्व के 60 से अधिक देशों में इसके प्रसार को देखा जा सकता है।

चिकित्सा विज्ञान के अनुसार किटाणु, जीवाणु और कवक नाशी इस पौधे का चिकित्सा क्षेत्र में पूर्व से उपयोग होता रहा है। टी0बी0, रैबीज, आस्थमा, अल्सर और छोटी माता व शरीर में फोड़े फुंसी आदि में पूर्व से ही वैध इसे दवा के रूप में प्रयोग करते रहे हैं। इस पौधे की अनोखी सुगंध इसे और लाभदायक बना देती है। दुनिया के बड़े बड़े पुष्प बागानों में इसको उगाया गया है और सुगंधित पौधे के रूप में इसकी विशेष पहचान है। अनाजों की खेती व वनों के लिए इसे घातक माना जाता है।

लेंटाना झाड़ियों के कारण जहां जंगल में आग फैल जाती है वहीं इसकी मौजूदगी में अन्य पौधों की वृद्धि रुक जाती है और फसलों का उत्पादन प्रभावित होता है। लेंटाना ऐसा खरपतवार है जिसे जैविक विधि से इसके परागण को रोककर भी इसकी वृद्धि को कम किया जाता है।

इसके साथ ही इसके नए पौधों को नष्ट कर भी इसे नियंत्रित किया जाता है जबकि अनेक रासायनिक दवाओं से भी इसकी वृद्धि को नियंत्रित किया जा सकता है। दुनिया भर के अनुभव बताते हैं कि लेंटाना का प्रबंधन और इसका उपयोग करने की क्षमता न होने पर यह पौधा उस देश और भूगोल के लिए घातक है। वैसे अनेक देश की वृद्धि पर चिंतित तो हैं लेकिन वे इसके उपयोग के भी अनेक उपाय निकाल रहे हैं। आज दुनिया भर में लेंटाना का अत्यधिक प्रसार इस बात का प्रमाण है कि यदि इसे नियंत्रित भी करना चाहें तो अत्यधिक खर्चीली यह विधि संभव नहीं हो पाती।

लेख-

हमारा पर्यावरण

हम सभी जानते हैं कि हमारे आसपास चारों ओर का आवरण ही हमारा पर्यावरण है। यानि किसी भी जीवित और निर्जीव चीज से मिलकर पर्यावरण बनता है। आज यह पर्यावरण खतरे में है। हमारे चारों और फैला प्रदूषण, जिसमें पानी का प्रदूषण, हवा का प्रदूषण, ध्वनि का प्रदूषण आदि लगातार विकराल रूप लेता जा रहा है। इसका मुख्य कारण मानव की गतिविधियां ही है। हम अपने फायदे के लिए नदियों, नालों, हवा, जंगलों, खेतों को प्रदूषित कर रहे हैं। हमारी फैक्ट्रियां, वाहन, सभी मिलकर इन घटकों को प्रदूषित कर रहे हैं।

आज हमारे सुंदर गांव भी प्रदूषण से अछूते नहीं रहे। प्लास्टिक का कचरा हो या दवाओं का, जंगल की आग हो अथवा घरेलू कचरा सभी हमारे गांवों को प्रदूषित कर रहे हैं। हमारे जंगलों की विविधता खत्म हो रही है। कभी हमारे मित्र वन्य जीव अब भोजन की कमी के कारण हमारे दुश्मन बनते जा रहे हैं। उनके हमारे बीच का तालमेल बिगड़ता जा रहा है। हमें समय रहते इस बात की समझ आ रही है कि हमारे प्रकृति को नुकसान पहुंचाने अथवा सुंदर बनाने में हमारी भूमिका अहम है। आज यह भी देखने में आ रहा है कि अनेक बच्चे अपने आसपास पर्यावरण को बचाने के प्रयास करने लगे हैं। पेड़ लगाने से लेकर प्लास्टिक कचरे को एकत्र करने के बच्चों के अनेक प्रयास गांवों में भी देखने को मिल रहे हैं।

दोस्तो इस छोटी से प्रयास को आप बड़ा प्रयास मानें और आने वाले दिनों में इससे और बच्चों को जोड़े। हमें यह याद रखना होगा कि हमें इस धरती को अपने प्रयासों से बचाना है, क्योंकि पर्यावरण बचेगा तो हम बचेंगे और इस सृष्टि के सभी जीवों की रक्षा होगी।

ममता/सुमन
परिस्थितिकीय केंद्र

कहानी-
फिर से खुशहाली आई

एक गॉव था जिसका नाम था जखोला। जखोला गॉव एक पहाडी की तलहटी में बसा था। गॉव के लोग काफी खुशहाल थे। क्योंकि उनको खाने के लिए पर्याप्त अनाज अपने खेतो से मिल जाता था। गॉव के पास ही नदी बहती थी जिसका पानी शीशे की तरह साफ था। यह नदी उनके गॉव वालो, उनके जानवरो, व तमाम जीव जन्तुओ की प्यास बुझाती थी। यह नदी गॉव वालों के खेतो मे सिंचाई करने के काम भी आती थी जिससे उनकी पैदावार काफी अच्छी होती थी।

गॉव वाले अपनी लकडी व चारा पत्ती के लिए आस–पास मौजूद जंगल पर निर्भर थे।गॉव के उपर घना जंगल था। जिसमें कई प्रजातियों के पेड पौधे थे।गॉव वाले अपनी जरूरत की चीजें जंगल से लेते थें पर जंगल को नुकसान नही पहुंचाते थे। इस तरह वह सदियों से जंगल का इस्तेमाल करते आये थे।

एक बार गॉव में बाहर से कुछ लोग आये और जंगल काटने लगे।गॉव के लोगो ने जब उसने कहा कि, आप हमारा जंगल क्यों काट रहे हैद तो उन्होंने बताया कि, जंगल तो सरकार का है और हमें सरकार की ओर से ठेका मिला है। इस तरह उन्होंने जंगल का काफी हिस्सा काट दिया।

जंगल कटने के बाद गॉव वालो ने देखा कि,जंगली जानवरो ने गॉव की तरफ आना शुरू कर दिया है। धीरे –धीरे जंगली जानवर गॉव वालों की खेती को भी नुकसान पहुंचाने लगे थे।बन्दर, सुअर,सौल, खरगोश जैसे जानवर आते उनके खेतों को चौपट कर देते।

एक दिन सभी गॉव वालो ने इस पर विचार किया कि ऐसा क्यों हो रहा है तो वह एक राय पर पहुचे। उनको लगा कि,जंगल कटने से वहॉ पर इन जीवों के लिए कुछ नही बचा,ये हमारे गॉव की तरफ इसीलिए आ रहे हैं। हम सबको मिल कर अपना जंगल बचाना होगा। गॉव के लोगो ने तय किया कि जब इस बार जंगल काटने वाले गॉव में आयेंगे तो सब मिलकर उनका विरोध करेंगे।

अगली बार जब जंगल काटने वाले गॉव में आये तो जखोला के सभी लोंग उनका विरोध करने लगे गॉव वालों ने उनको काफी समझाया और बताया कि,यह जंगल उनके लिए बेहद जरूरी है और वह इसे किसी भी हालत में कटने नही देंगे।गॉव वालों का विरोध देखकर जंगल काटने वालो को वापस लौटना पडा। जंगल के काट दिए हिस्से में गॉव वालो ने नये पौधें लगा दिये उनकी मेहनत रंग लाई जंगल फिर से हरा भरा हो गया। जंगली जानवर भी जंगल में लौट गये और जखोला में फिर से खशहाली आ गई।

कविता बिष्ट,ग्रीन क्लब, नौगॉव

भुर्ज (भोज)- जिसकी खाल में दर्ज हुआ इतिहास

दोस्तो, आपने कभी सोचा है कि जब दुनियां कागज नहीं था, तब लोग किसमें लिखते थे। तब लिखने के लिए लोग जिस पेड़ की खाल का प्रयोग करते थे उसे भोज पत्र कहते थे। सामान्यतः मुझे भुर्ज अथवा भोज का पेड़ कहा जाता है। आदि काल से ही मैं मानव के विकास का गवाह रहा हूँ। हजारों हजार राजाओं ने मेरी छाल पर अपनी बातें लिखी। अनेक राजसत्ताओं के संदेश मेरी खाल पर यहां से वहां गए और अनेक ग्रंथ, सूत्र आज भी मेरी खाल में पुस्तकालयों में व संग्रहालयों में सुरक्षित हैं।

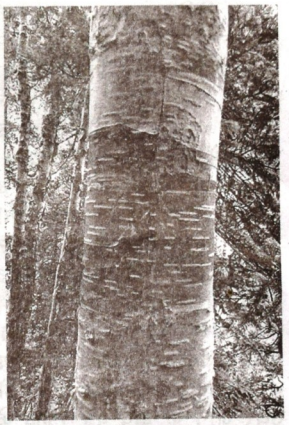

तब मेरी खाल आज के कागज जैसी साफ नहीं थी लेकिन उसमें लिखावट साफ पढ़ने में आती थी।

मेरा पेड़ का वैज्ञानिक नाम बिट्यूला यूटलिस है अंग्रेजी में मुझे ब्रिच कहते हैं। मेरा पेड़ उच्च क्षेत्रों में समुद्र सतह से 2500 से 2800 मीटर ऊंचाई तक उगता है।

इसके अलावा दुनिया में उत्तर अमेरिका,यूरोप और उत्तर एषिया में भी मेरा घर है ।दुनियां भर में मेरी कई प्रजातियॉ पाई जाती है।जैसे– कानू भूर्ज, पीला भूर्ज, लाल भूर्ज,काला भूर्ज,धूसर भूर्ज आदि समतीषोशण जलवायु और अच्छी जल निकासी वाल जगह जहॉ पर पर्याप्त सूर्य की रोषनी हो मुझे काफी पसंद आती है। आमतौर पर मेरे पेंड छोटी और मध्यम ऊँचाई के होते है। मेरे पेडो की औसत ऊँचाई 65 फीट तक होती है।मेरी कुछ प्रजातियॉ 40 फीट तो कुछ प्रजातियां 80 फीट तक लम्बी भी होती हैं। मेरी पत्तियॉ एकल या जोड़े दोनों रूपों में पायी जाती है इनकी लम्बाई 5 से 8 सेमी0 तक होती है। पत्तियों के किनारे दांतेदार होते है।

गर्मी के मौसम में मेरे फूल खिलते है। और शरद ऋतु में मेरे फल परिपक्व हो जातें है। मेरे फल छोटे–छोटे और पंखदार होते है। मेरी छाल लाल और सफेद रंग की होती है जिसकी सतह चिकनी होती है। यह खाल कागज की तरह उखड़ती है और कागज से कहीं ज्यादा मजबूत होती है। प्राचीन भारत में अधिकतर पुस्तकें मेरी छाल पर ही लिखी जाती थी। भोजपत्र के नाम से जानी जाने वाली मेरी छाल हिन्दू धर्म में पवित्र मानी जाती है और कई लोग इसके वस्त्र भी विशिष्ठ अवसरों पर पहनते है।

मैं पर्यावरण और मनुष्य के लिए काफी काम का हूँ। दुनिया भर में मेरा कई तरह से उपयोग किया जाता है। कई लोग मेरी लकड़ी का इस्तेमाल ईधन,सांचे बनाने,फर्नीचर, खेती के औजारों। व अन्य सामानों को बनाने के लिए करते है।

मेरी कुछ प्रजातियों की छाल का उपयोग प्याले,तश्तरियॉ, आभूषण,टोकरियां और सजावट का सामान बनाया जाता है।मेरी लकडी टिकाऊ और कठोर होने के कारण मेरी लकड़ी का उपयोग घर के भीतर सजावट के लिए भी किया जाता है ।खास तौर पर मेरी काली भूर्ज प्रजाति इसके लिए बहूमूल्य मानी जाती है

मेरी छाल में काफी औषधीय गुण भी पाये जाते है भारत में प्राचीन काल से ही मेरी छाल का उपयोग लिखने के साथ–साथ कई बीमारियों के उपचार में भी किया जाता रहा है । मेरी छाल का उपयोग मिंगी, पागलपन, उन्माद,नाक से खून बहने,दस्त और पेचिश जैसी बीमारियों में किया जाता है। मेरी छाल की रोगाणुनाशक भी होती है । इसीलिए इसके काढ़े का उपयोग घाव धोने और घाव भरने के लिए किया जाता है।

कई देशों में मेरे रज का प्रयोग पेय पदार्थ बनाने के लिए भी किया जाता है। मेरी छाल में रेजिनयुक्त तेल तथा अन्य रसायन पाये जाते है। दोस्तों मेरा बहुपयोगी होना ही मेरे लिए खतरा बन चुका है क्योंकि आज मनुष्य द्वारा अपने फायदे के लिए मेरा लगातार दोहन किया जा रहा है।

उत्तराखण्ड की बात करें तो मैं यहां पर भी खतरे की जद में हूँ। गंगोत्री से गोमुख ग्लेशियर की ओर जाते हुए 14 किमी0 पहले भोजवासा नाम की जगह आती है। जहॉ पर मेरे वृक्षों का घना जंगल होने के कारण ही इस जगह को यह नाम मिला। पर आज पर्यटकों और धार्मिक पर्यटन पर आने वाले लोगों ने जंगल को काफी नुकसान पहुंचाया और आज वहां पर मेरी गिनी चुनी जनसंख्या ही है।

यही हाल दूसरी जगहों का भी है और मेरी प्रजाति के विलुप्त होने का खतरा पैदा हो गया है। मुझे उम्मीद है कि मेरे दोस्त मेरा साथ देंगे और ऐसा कतई नही होने देंगे।सोचों अगर में विलुप्त हो गया तो आप एक बहुपयोगी दोस्त को खो देंगे जो आपके, मेरे और हमारे पर्यावरण के लिए दुखद होगा।

टीडीएच जर्मनी के माध्यम से तथा आर्थिक सहयोग मंत्रालय जर्मनी के सहयोग से सीमित वितरण हेतु अमन द्वारा प्रकाशित
तथा नवल प्रिंटर्स, अल्मोड़ा से मुद्रित